आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 23 रोहतक, 14 नवम्बर, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

अथर्ववेद में स्वर्ग

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

व्याकरण शास्त्रानुसार 'स्वर्ग' शब्द 'स्वर्' उपपद में 'गम्लृ-गतौ' धातु से 'ड' **प्रकरणेऽन्येष्वपि दृश्यते।** अ० 3.248 वार्तिक सूत्र से 'ड' प्रत्यय के योग से बनता है। गति के ज्ञान-गमन-प्राप्ति तीन अर्थ होते हैं। 'स्व' सुख का अनुभव होना, सुख में प्रविष्ट होना, सुख की प्राप्ति होना ही स्वर्ग अर्थात् सुख है। इसी प्रकार 'स्वर्गलोक' का अर्थ है। 'लोकृ दर्शने' धातु से लोक शब्द बनता है जिसका अर्थ 'स्थान' है। जहाँ स्वर्ग प्राप्त होता है, सुख प्राप्त होता है वह स्वर्गलोक है। स्थान से यहाँ किसी विशेष स्थान से नहीं है बल्कि जिस अवस्था में हमें सुख प्राप्त हो वही स्वर्ग है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के 'स्वमन्तव्या-मन्तव्यप्रकाश' में लिखते हैं—'स्वर्ग'-नाम सुखविशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है। 'नरक' जो दुःखविशेष भोग और सामग्री को प्राप्त होना है। सत्यार्थप्रकाश के नौवे समुल्लास में वे मुक्ति के प्रसंग में स्वर्ग-नरक की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—'मुक्ति में जीवात्मा निर्मल होने से पूर्ण ज्ञानी होकर उसकी सब सन्निहित पदार्थों का भान अर्थात् यथावत् होता है।' यही सुखविशेष 'स्वर्ग' और विषयतृष्णा में फँसकर दुःखविशेष भोग करना 'नरक' कहाता है। 'स्वः' सुख का नाम है, 'स्वः सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः, अतो विपरीतो दुःखभोगो (यस्मिन् स) नरक इति' जो सांसारिक सुख है वह 'सामान्य स्वर्ग', और जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही 'विशेष स्वर्ग' कहाता है। यहाँ पर महर्षि जी ने स्वर्ग को भी दो भागों में बांटकर बहुत ही सुन्दर एवं सार्थक विचार प्रस्तुत करके संसार को उपकृत किया है। लोक शब्द का अर्थ है 'जो देखा जाए, जो जाना जाए।' इसके भाव हम इस प्रकार से समझ सकते हैं—स्थान, अवस्था या काल, सुख-विशेष की अवस्था, प्रकाश की अवस्था आदि। लोक शब्द का व्यवहार बहुत-से प्रसंगों में किया जाता है, जैसे-कन्या पितृलोक को छोड़कर पतिलोक को जा रही है

क्रमशः पृष्ठ 2 पर...

अथर्ववेद में स्वर्ग..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

आदि। जैसे स्वर्गलोक कोई स्थानविशेष नहीं है उसी प्रकार नरक भी कोई स्थान विशेष नहीं है। स्वर्ग का अर्थ सुख है इसलिए नरक का अर्थ दु:ख हुआ क्योंकि नरक शब्द स्वर्ग का विपरार्थक है। रामायण के सुप्रसिद्ध टीकाकार गोविन्दराज ने नरक का अर्थ इस प्रकार किया है—**अत्र नरक: शब्देन दु:खं लक्ष्यते**-यहाँ नरक शब्द का अर्थ दु:ख है। महर्षि यास्क जी ने निरुक्त में लिखा है—**न्यरकं न्यरकं नीचैर्गमनम् इति वा** (1.3.11) अर्थात् दु:ख, अध:पतन या अवनति का नाम नरक है। नरक का सीधा-सा अर्थ है—नीचे जाना, पतन का लोक, निरुक्त में भी कहा है—नीचे जाना, सुख का अभाव। निरुक्त में (2.14) भी स्वर्ग के पर्यायवाची नाम, द्यौ तथा सुकृतस्यलोक दिए हैं। मीमांसा में (6.1.1) 'स्वर्ग' सुखविशेष को माना गया है। स्वर्ग शब्द से स्थान विशेष व वस्तु विशेष का ग्रहण मीमांसा को स्वीकार्य नहीं है। वेद के अनेक मन्त्रों में द्यौलोक, ब्रह्मलोक, स्वर्गलोक, मोक्ष तथा सुकृतलोक आदि की चर्चा की गई है। अथर्ववेद में स्वर्ग प्राप्ति के साधन इस प्रकार बताए हैं—

इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्वं क्षेत्रात्कामदुघा म एषा।
इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु य: स्वर्ग:॥
(अथर्व० 11.1.28)

हम ज्ञान का संचय करें, निरोग बनें, वीर्य रक्षण करने वाले हों, वानस्पतिक भोजन करें, घर में कामदुघा धेनु रखें। ज्ञानियों को लोकहित के कार्यों के लिए धन दें और पालनात्मक प्रवृत्ति वाले बनें। अथर्ववेद के 12वें काण्ड का तीसरे सूक्त का देवता 'स्वर्ग' है। इसमें गृहस्थ को स्वर्ग बनाने के लिए बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें कही गई हैं—पुरुष शक्तिशाली हो, उसे अनुकूल जीवन-साथी मिले, गृहस्थ में संयम व व्यवस्था में चले, जिससे ज्ञान, वीर्य और तेज में वृद्धि हो। केवल सन्तानोत्पत्ति हेतु भी पति-पत्नी संसर्ग करें। पति-पत्नी दोनों मिलकर कार्य करें। गर्भ में ही सन्तान को अच्छे संस्कार दें ताकि संतान का निर्माण ठीक प्रकार से हो सके। सात्त्विक भोजन करके निरोगता को प्राप्त करें। हमारे घरों में यज्ञशीलता बनी रहे। श्रद्धापूर्वक आगे बढ़ने की दिशा में चलें, यज्ञशेष को ही खाने वाले बनें तथा प्रभु की उपासना करें। अपने ऐश्वर्य का धर्मकार्यों के लिए ही प्रयोग करें। उत्तम प्रजा को पैदा करके हम देश को उन्नत करें, ध्रुवता धारण करें, तपस्वी व सत्यवादी बनें, रोग न हों, इस प्रकार की व्यवस्था करें। उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिए पति-पत्नी उपासना करें, ज्ञानवान् बनें तथा संयमी बनें। धन-सम्पन्न बनें, प्रभुभक्त बनें, दिव्य गुण अपनाएं, पति-पत्नी तथा परिवार में प्रेम-व्यवहार हो, कभी भी एक-दूसरे पर क्रोध न करें, ऋतु-अनुकूल भोजन करें, देववृत्ति के बनें तथा यज्ञशील बनें। पति-पत्नी एक दूसरे से छिपकर कुछ न ग्रहण करें, मधुर वचन बोलें, सदा सुकृत ही करें, हमारे जीवन में पाप और पतन न हो। द्वैषभाव न रखें, सदा सात्त्विक वृत्ति बनाये रखें, प्रत्याहार का स्वभाव बनाएं....

यत्रा सुहार्द: सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्व: स्वाया:।
तं लोकं यमिन्यभिसंबभूव सा नो मा हिंसीत्पुरुषान्पशूंश्च॥
यत्रा सुहार्द: सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्व: स्वाया:।
अश्लोणा अङ्गरहुता: स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्॥
(अथर्व० 3.28.5, 6.120.3)

जब बुद्धि मन का शासन करने वाली होती है तब लोगों के हृदय उत्तम होते हैं, उनके कर्म उत्तम होते हैं, शरीर निरोग होते हैं, पुरुषों के प्रति इनका व्यवहार मधुर होता है, मांसाहार के प्रति अरुचि के कारण यह पशुओं का संहार नहीं करती। इस प्रकार यामिन बुद्धि घर को स्वर्ग बना देती है। स्वर्गतुल्य गृह वह है जहाँ सबके हृदय पवित्र हैं, सब यज्ञादि उत्तम कर्मों को करने वाले हैं, सबके शरीर निरोग हैं, अंग अविकृत हैं, स्वभाव सरल व अकुटिल है, माता-पिता का आदर है और सन्तानों का शिक्षण-दीक्षण ठीक है।

अथर्ववेद के चौथे काण्ड के चौतीसवें सूक्त में ब्रह्मौदन के स्वरूप की चर्चा करने के बाद इस ज्ञान-भोजन द्वारा स्वर्ग-लोक की कामना की गई है-(अथर्व० 4.34.5 से 7) हम ज्ञान-भोजन करने वाले बनें। इस ज्ञान-ग्रहणरूप तप से ही उस यज्ञ की भावना का हम में उदय होता है जो हमारी सब शक्तियों का विस्तार करती हैं। ज्ञान-भोजन करने वाले लोग भौतिक सुखों से ऊपर उठकर प्राणसाधना करते हुए पवित्र व दीप्त जीवन बिताते हैं। ये लोग कामाग्नि से संतप्त नहीं होते। इनका घर स्वर्गलोक-सा बन जाता है। ज्ञान-प्रधान जीवन वाला व्यक्ति दरिद्र नहीं होता, वह प्रभु का उपासक होता है, दैवी सम्पत्ति को प्राप्त करता है तथा विनीत ज्ञानियों के सम्पर्क में हर्ष का अनुभव करता है। ब्रह्मौदन का सेवन करने वाला ज्ञानप्रधान व्यक्ति सदा शक्तिशाली बना रहता है, उत्तम शरीर रथ वाला होता हुआ कभी मार्गभ्रष्ट नहीं होता तथा उत्तम बातों का परिग्रह करता हुआ द्युलोक से भी ऊपर उठकर ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। ज्ञानयज्ञ हमें लक्ष्य प्राप्ति में सर्वाधिक सहायक है। यह शक्ति-प्रसारक यज्ञ हमें स्वर्ग में ले जाता है। इस यज्ञ के लिए वातावरण को उपयुक्त बनाने के लिए हम घरों में छोटी-छोटी पुष्करणियों का आयोजन करें। उनमें खिले कमल गृह को लक्ष्मी-सम्पन्न बनायेंगे। इनका केसर नीरोगता का कारण बनता हुआ आनन्द का संचार करेगा। हमारेघरों में 'घृत, मधु, पवित्र जल, दूध व दही' की कभी कमी न हो। घर में चारों ओर कमलों के छोटे-छोटे तालाब हों। घर में दूध, उदक व दधि से पूर्ण घड़े मंगल के प्रतीक हैं। ये घर में माधुर्य का सेचन करने वाले हैं।

अथर्ववेद में ही कहा गया है (अथर्व० 12.3.6,16,17) सात्त्विक अन्नों के सेवन के परिणाम स्वरूप हमारे मस्तिष्क व शरीर दीप्त व शक्त हों। हमारे घरों में बड़ों का आदर व छोटों का प्रेमपूर्वक निर्माण हो। हमारा घर यज्ञशील पुरुषों का वह श्रेष्ठ स्वर्ग बने, जिसमें ज्योति व माधुर्य का व्यापन हो। इस स्वर्ग में हम दीर्घकाल तक पुत्रों के साथ, प्रभुस्मरण पूर्वक निवास करें। हम यज्ञों को अपनायेंगे तो दिव्य गुणों को प्राप्त करते हुए स्वर्ग को प्राप्त करने वाले होंगे। हम घर का स्वर्ग बना पाएं। पत्नी व पुत्रों के साथ सदा प्रेम से रहें। पति-पत्नी की अनुकूलता हो। अलक्ष्मी व कृपणता का हमारे यहाँ निवास न हो। (अथर्व० 11.1.7,8,17,18,28,30,31,35 से 37) में कहा गया है कि हम शक्ति का वर्धन करते हुए उन्नत होने का ध्यान करें। यह शक्ति का रक्षण ही हमें उन्नत करके 'स्वर्गलोक' में स्थिति वाला करता है। इस पृथिवी पर ध्यान व यज्ञादि उत्तम कर्मों को करते हुए हम शुभ लोक को प्राप्त करें। पवित्र जीवन वाली स्त्रियां कर्मों में व्याप्त रहें, खाली समय को ज्ञान-प्राप्ति में लगायें। इस जीवन में ये उत्तम संतानों व उत्तम पशुओं को प्राप्त करेंगी। ज्ञानरुचि-गृहपति घर को स्वर्ग बनाने वाला है। हमें चाहिए कि हम वेदज्ञान द्वारा जीवन को शुद्ध बनाएं, मलक्षरण द्वारा पवित्र जीवन वाले हों। सोम को शरीर में ही सुरक्षित रखें, वासनाओं का विध्वंस करके यज्ञशील हों। क्रियामय जीवन वाले होकर ज्ञान-प्राप्ति में लगाने वाले हों। यही मार्ग है स्वर्ग-प्राप्ति करने का। स्वर्ग का मार्ग यह है कि हम ज्ञान का संचय करें, नीरोग बनें, वीर्यरक्षण करने वाले हों, वानस्पतिक भोजन करें, घर में कामदुघा धेनु रखें, ज्ञानियों को लोकहित के कार्यों के लिए धन दें और पालनात्मक वृत्ति वाले हों, श्रमशील, ज्ञानाग्नि में अपने को परिपक्व करने वाले व सोम का सम्पादन करने वाले बनें। प्रकाश व सुख के मार्ग पर आरूढ़ हों। उत्कृष्ट जीवन को प्राप्त करके स्वर्ग-तुल्य इस जीवन को बिताने के बाद प्रभु को प्राप्त करें, मुक्त हो जायें। प्रभु वृषभ-स्वर्ग है। वासनाओं को विनष्ट करने वाले ज्ञान-रुचि पुरुषों को प्राप्त होते हैं। पुण्यकर्मा लोगों के लोक में प्रभु का निवास है। वहाँ सज्जन संघ में ही हम पति-पत्नी का पवित्रीकरण होता है। हम ज्ञान का संचय करें, ज्ञान के अनुसार कर्मों को करने वाले बनें। देवयान मार्गों पर चलें। इन पुण्य कर्मों के द्वारा 'पृथिवीलोक से ऊपर अन्तरिक्ष को, अन्तरिक्ष से ऊपर द्युलोक को तथा द्युलोक से ऊपर उठकर ब्रह्मलोक को प्राप्त करें।' ज्ञान प्राप्त करके हम सुकृतों द्वारा प्रकाशमय लोक का विजय करें। प्रकाशमय लोक से आनन्दमय लोक में पहुँचें।

इसी क्रम में आगे कहा कि (अथर्व० 18.4.1 से 7,10,11,13,14) हम रक्षणात्मक कर्मों में प्रवृत्त हुए-हुए वेदवाणी के स्वाध्याय से प्रभु के प्रकाश को देखने का प्रयत्न करें। प्रभु प्रेरणा को प्राप्त करने वाला व्यक्ति यज्ञशील बनता है। यह सदा पुण्यकर्मा लोगों के लोक में निवास करने वाला होता है। देव यज्ञमय जीवन वाले होते हुए घरों को स्वर्गमय बनाते हैं। हम ऋत के मार्ग को देखें। इसी मार्ग से पुण्यशील लोग चलते हैं। इस मार्ग में गुणों का आदान करने वाले आदित्य मधु का भक्षण करते हैं। यही तृतीय नाक लोक है। हमें इसी का आश्रय करना चाहिए। हम पूर्ण स्वस्थ, पुण्यकर्मा, गुणों व ज्ञानों का आदान करने वाले बनकर प्रभु का उपासना करते हुए अपने घरों को स्वर्ग बनाएं।

क्रमश: पृष्ठ 5 पर.....

वेद न पढ़ने से बच्चों का पतन

-: वेद-मन्त्र :-

यदस्याः कस्मैचिद्भोगाय बालान्कश्चित्प्रकृन्तति।
ततः किशोरा म्रियते वत्सांश्च घातुको वृकः॥

(अथर्व० 12.4.7)

अर्थ—(यत् कश्चित्) कोई व्यक्ति जब (कस्मैचिद् भोगाय) किसी भोग की कामना के लिये (अस्याः बालान् प्रकृन्तति) इस वेदवाणी के केश अर्थात् बलों को कतर देता है (ततः) तब इस कुकृत्य से (किशोराः) यौवन की दहलीज पर आरूढ़ किशोर (म्रियते) पतित, आचार भ्रष्ट हो जाते हैं। (वृकः) भेड़िये के समान ऐसा व्यक्ति (वत्सान् घातुकः) अपने बच्चों का हत्यारा है।

पूज्य आचार्य बलदेव जी

वेद आचार को बतलाने वाला ग्रन्थ है। मनुस्मृति कहती है—

वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥

(मनु० 2.12)

वेद, स्मृति, सज्जन पुरुषों का आचार और अपने आत्मा के अनुकूल सत्याचरण, ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है।

बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिये जब वे तीन वर्ष के हो जायें तभी से वेद के मन्त्र और सुभाषित उन्हें माता-पिता स्मरण करायें।

चरेदेवा त्रैहायणादविज्ञातगदा सती।
वशां च विद्यान्नारद ब्राह्मणास्तर्ह्योष्याः॥ (अथर्व० 12.4.16)

इस सर्वगुण सुभूषित वेदवाणी को तीन वर्ष के बच्चों को कण्ठस्थ कराया जाए। इस कार्य के लिये सुयोग्य विद्वानों को नियुक्त करना चाहिये जो खेल-खेल में बच्चों को जीवनोपयोगी वेद के मन्त्र और सुभाषितों द्वारा उन्हें सदाचार की शिक्षा दे। अनुभव में यह आया है कि बाल्यकाल में जो बात बच्चों को कविता या गीत के माध्यम से कण्ठस्थ करा दी जाती है वह जीवन भर स्मृति में बनी रहती है। जैसे आजकल छोटे बच्चों को आंगनवाड़ी या नर्सरी की कक्षा में भेजते हैं वैसे ही वैदिक नर्सरी की कक्षाएँ चलाई जाएँ। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं—"जब पाँच वर्ष का लड़का या लड़की हो तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराएँ। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता-पिता, आचार्य, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे वर्त्तना इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें।"

योऽनधीत्य वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनु० 2.168)

जो वेद को न पढ़ के अन्यत्र श्रम किया करता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शूद्रभाव को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

भगवती वेदवाणी सावधान करती हुई कह रही है—जो सांसारिक भोग, धनार्जन एवं सुख-सुविधा के लिए अपने बालकों को वेदाध्ययन से हटाकर अन्यत्र लगा देता है **'ततः किशोरा म्रियन्ते'** तब आचार एवं तप से रहित हो जाने के कारण कुमारावस्था अर्थात् युवा होने से पहले ही वे युवक विषयों में फँसकर जवानी को लुटा देते हैं और युवावस्था आने से पह ले ही बूढ़े दिखाई देने लगते हैं। कितने ही मद्यपान, वेश्यागमन आदि में फँसकर असमय में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

जैसे भेड़िया छोटे बछड़ों और मेमनों को उठाकर ले जाता और उन्हें मौत के घाट उतार देता है। ऐसे ही वह माता-पिता उसी के समान हैं, जो अपने बच्चों को वेदज्ञान से वंचित रख फैशन, नाच-गान और तप के स्थान पर आराम के साधन उपलब्ध कराने में प्रसन्न हो रहे हैं। इसलिये वे बच्चों के अभिभावक, संरक्षक के स्थान पर भेड़िये के समान घातक ही जानने चाहियें।

—आचार्य बलदेव

वार्षिक उत्सव व यज्ञ उपदेश सम्पन्न

दिनांक 24, 25 सितम्बर 2015 को आर्यसमाज जसराणा का भव्य कार्यक्रम हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में यज्ञ व भजनोपदेश कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी के ब्रह्मचर्य के जोशीले व्याख्यान से युवाओं में प्रेरणा भरकर उन्हें जनेऊ प्रदान किये। कार्यक्रम में प्रो. राजकुमार तथा अन्य शिक्षाविद् भी सम्मिलित हुए। इसी प्रकार दिनांक 8, 9, 10 अक्तूबर 2015 को वैदिक भक्ति साधन आश्रम में सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदमित्र जी थे। माता कृष्णा जी प्रधाना मुख्य यजमान थीं। वहीं रोहतक के अतिरिक्त शहरों से यजमान सम्मिलित हुए। वेदपाठ ब्र० जीतपाल, ब्र० बलदेव ने किया। इसी क्रम में 17, 18 अक्तूबर 2015 को शक्तिनगर रिवाड़ी में बृहद् यज्ञ व वेदोपदेश कार्यक्रम हुआ। आर्यसमाज के प्रचार से स्त्रीशिक्षा, अछूत प्रथा तथा समानता का जो प्रभाव समाज में हुआ यह ऋषि दयानन्द जी के दूरदृष्टि का परिणाम है। श्री महेन्द्र आर्य एसडीओ व अन्य सहयोगी बन्धुओं ने सुन्दर व्यवस्था की।

दीपावली के उपलक्ष में ❑ खुशहालचन्द्र आर्य

दीपावली है अन्धकार पर प्रकाश की विजय का त्यौहार।
इसलिए छोड़ दो अन्धविश्वास, पाखण्ड जिनका नहीं है कोई आधार॥
दीपावली है अन्याय पर न्याय की विजय का त्यौहार।
मिटाते रहो अन्याय, स्थापित करो न्याय, यही है 'गीता' का सार॥
दीपावली है अधर्म पर, धर्म की विजय का त्यौहार।
अन्य मतों को छोड़ वैदिक धर्म अपनाओ जो देता है आत्मा को आहार॥
दीपावली है बेईमानी पर, ईमानदारी की विजय का त्यौहार।
जीवन में यदि उन्नत होना चाहो तो करो, सभी से ईमानदारी का व्यवहार॥
दीपावली है कूड़ा-कर्कट पर, सफाई की विजय का त्यौहार।
कूड़े-कर्कट से करो सदा नफरत और सफाई से करो हमेशा प्यार॥
दीपावली है हँसो और हँसाओ और सबको प्रसन्न रखने का त्यौहार।
सबसे रखो अच्छा व्यवहार, मत करो किसी भी प्राणी पर अत्याचार॥
अधिकतर लोग समझते हैं, इसे रावण पर राम की विजय का त्यौहार।
जो भी हो, हमसे सीखें, कैसे आवें मेरे जीवन में 'राम' के संस्कार॥
दीपावली का त्यौहार हमें सिखलाता है, सबसे करना प्यार।
न कभी किसी पर जुल्म करो, न करो किसी से गलत व्यवहार॥
यदि करोगे हमेशा हर व्यक्ति से प्यार और रखोगे सबसे सद्व्यवहार।
तभी हम कह सकेंगे, मनाया हमने सही अर्थों में दीपावली का त्यौहार॥
दीपावली है बुराइयों को छोड़, अच्छाइयों को अपनाने का त्यौहार।
कहता है **'खुशहाल'** इस सिद्धान्त को लो अपने जीवन में उतार॥

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला)
कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

आचार्यपद रजत जयन्ती समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में गुरुकुल के 104 वार्षिकोत्सव के अवसर पर पूज्य आचार्य जगद्देव नैष्ठिकी जी (स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक) के आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद के आचार्यपद को सुशोभित करने के 25 वर्ष होने के अवसर पर दिनांक 27, 28 एवं 29 नवम्बर 2015 को आचार्यपद रजत जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। आप सभी गुरुकुल हितैषी धर्मप्रेमी सज्जन इष्ट-मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें। जानकारी हेतु निम्न नंबरों पर सम्पर्क करें—

09424471288, 09907056726

भावत्क:—**आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक,**
सचिव-आर्ष गुरुकुल समिति, 09424471288

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज जवाहर नगर, पलवल	25 से 29 नव० 2015
2.	आर्यसमाज चरखी दादरी, जिला भिवानी	28 से 29 नव० 2015
3.	**आर्य युवा महासम्मेलन, पानीपत** स्थान-आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत	6 दिसम्बर 2015
4.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119, गौतम नगर, नई दिल्ली-49	16 नव० से 6 दिस० 2015

—सभामन्त्री

गाय के लाभ

गाय का दूध पृथ्वी पर सर्वोत्तम आहार है। उसे मृत्युलोक का अमृत कहा गया है। मनुष्य की शक्ति एवं बल को बढ़ाने वाला गाय का दूध जैसा दूसरा कोई श्रेष्ठ पदार्थ इस त्रिलोकी में नहीं है। पंचामृत बनाने में इसका उपयोग होता है।

गाय का दूध पीला होता है और सोने जैसे गुणों से युक्त होता है।

केवल गाय के दूध में ही विटामिन ए होता है, किसी अन्य पशु के दूध में नहीं।

गाय का दूध, जीर्णज्वर, मानसिक रोगों, मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, पांडुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, गुल्म, रक्तपित्त, योनि रोग आदि में श्रेष्ठ है।

प्रतिदिन गाय के दूध के सेवन से तमाम प्रकार के रोग एवं वृद्धावस्था नष्ट होती है। उससे शरीर में तत्काल वीर्य उत्पन्न होता है।

एलोपैथी दवाओं, रासायनिक खादों, प्रदूषण आदि के कारण हवा, पानी एवं आहार के द्वारा शरीर में जो भी विष एकत्रित होता है उसको नष्ट करने की शक्ति गाय के दूध में है।

गाय के दूध से बनी मिठाइयों की अपेक्षा अन्य पशुओं के दूध से बनी मिठाइयां जल्दी बिगड़ जाती हैं।

गाय को शतावरी खिलाकर उस गाय के दूध पर मरीज को रखने से क्षय रोग (T.B.) मिटता है।

गाय के दूध में दैवी तत्त्वों का निवास है। गाय के दूध में अधिक तेज तत्त्व एवं कम से कम पृथ्वी तत्त्व होने के कारण व्यक्ति प्रतिभासम्पन्न होता है और उसकी ग्रहण शक्ति (Grasping Power) बढ़ती है। इस दूध में विद्यमान 'सेरीब्रोसाडस' तत्व दिमाग एवं बुद्धि के विकास में सहायक है।

केवल गाय के दूध में ही (Stronitan) तत्त्व है जो कि अनुविकिरणों का प्रतिरोधक है। रशियन वैज्ञानिक गाय के दूध-घी को एटम बम के अणु कणों के विष का शमन करने वाला मानते हैं और उसमें रासायनिक तत्त्व नहीं के बराबर होनेके कारण उसके अधिक मात्रा में पीने से 'साइडफेक्ट' या नुकसान नहीं होता।

कारनेल विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान के विशेष प्रोफेसर गोरायटे कहते हैं कि गाय के दूध से प्राप्त होने वाले MDGI प्रोटीन के कारण शरीर की कोशिकाएँ कैंसर युक्त होने से बचती हैं।

गाय के दूध से कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता बल्कि हृदय एवं रक्त की धमनियों के संकोचन का निवारण होता है। इस दूध में दूध की अपेक्षा आधा पानी डालकर, पानी जल जाये तब

तक उबालकर पीने से कच्चे दूध की अपेक्षा पचने में अधिक हल्का होता है। गाय के दूध में उसी गाय का घी मिलाकर पीने से और गाय के बने हुए हलवे को, सहन हो सके उतने गर्म-गर्म कोड़े जीभ पर फटकारने से कैंसर मिटने की बात जानने में आई है।

गाय का अत्यन्त स्वादिष्ट, स्निग्ध, मुलायम, चिकनाई से युक्त, मधुर, शीतल, रुचिकर, बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, स्मृतिवर्धक, जीवन दायक, रक्तवर्धक, वाजीकारक, आयुष्यकारक एवं सर्वरोग को हरने वाला है।

- गाय का घी नाक में डालने से पागलपन दूर होता है।
- गाय का घी नाक में डालने से एलर्जी खत्म हो जाती है।
- गाय का घी नाक में डालने से लकवा के रोग में भी होता है।
- 20-25 ग्राम घी व मिश्री खिलाने से शराब, भांग व गांझे का नशा कम हो जाता है।
- गाय का घी नाक में डालने से कान का पर्दा बिना आपरेशन के ही ठीक हो जाता है।
- गाय का घी नाक में डालने से नाक की खुश्की दूर होती है और दिमाग तरोताजा होता है।
- गाय का घी नाक में डालने से कोमा से बाहर निकलकर चेतना वापिस लौट आती है।
- गाय का घी नाक में डालने से बाल झड़ना समाप्त होकर नए बाल भी आने लगते हैं।
- गाय के घी को नाक में डालने से मानसिक शांति मिलती है, याददाश्त तेज होती है।
- हिचकी के न रुकने पर खाली गाय का आधा चम्मच घी खायें, हिचकी स्वयं रुक जाएगी।
- गाय के घी का नियमित सेवन करने से एसिडिटी व कब्ज की शिकायत कम हो जाती है।
- गाय के घी से बल और वीर्य बढ़ता है और शारीरिक व मानसिक ताकत में भी इजाफा होता है।
- गाय के पुराने घी से बच्चों को छाती और पीठ पर मालिश करने से कफ की शिकायत दूर हो जाती है।
- अगर अधिक कमजोरी लगे तो एक गिलास दूध में एक चम्मच गाय का घी और मिश्री डालकर पी लें।
- गाय का न सिर्फ कैंसर को पैदा होने से रोकता है और इस बीमारी को फैलने को भी आश्चर्यजनक ढंग से रोकता है।
- जिस व्यक्ति को हार्ट अटैक की तकलीफ है और चिकनाई खाने की मनाही है तो गाय का घी खायें, हृदय मजबूत होता है।
- देशी गाय के घी में कैंसर से लड़ने की अचूक क्षमता होती है। इसके सेवन से स्तन तथा आंत के खतरनाक कैंसर से बचा जा सकता है।
- घी छिलका सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शक्कर (बूरा) तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बांध लें। प्रात: खाली पेट एक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा गुनगुना दूध घूंट-घूंट करके पीने से स्त्रियों के प्रदर रोग में आराम होता है, पुरुषों का शरीर मोटा ताजा यानी सुडौल बलवान बनता है।
- फफोलों पर गाय का देशी घी लगाने से आराम मिलता है।
- गाय के घी की छाती पर मालिश करने से बच्चों के बलगम को बाहर निकालने में सहायक होता है।
- सांप के काटने पर 100-150 ग्राम घी पिलायें ऊपर से जितना गुनगुना पानी पिला सकें पिलायें जिससे उलटी और दस्त तो लगेंगे ही लेकिन सांप का विष कम हो जायेगा।
- दो बूंद देशी गाय का घी नाक में सुबह-शाम डालने से माइग्रेन दर्द ठीक होता है।
- सिरदर्द होने पर शरीर में गर्मी लगती हो तो गाय के घी की पैरों के तलवे पर मालिश करें, सरदर्द ठीक हो जायेगा।
- यह स्मरण रहे कि गाय के घी से सेवन से कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता है। वजन भी नहीं बढ़ता है। वजन को संतुलित करता है। यानि कि कमजोर व्यक्ति का वजन बढ़ता है, मोटे व्यक्ति का मोटापा (वजन) कम होता है।
- एक चम्मच गाय का शुद्ध घी में एक चम्मच बूरा और एक चौथाई चम्मच पिसी काली मिर्च इन तीनों को मिलाकर सुबह खाली पेट और रात को सोते समय चाटकर ऊपर से गर्म मीठा दूध पीने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- गाय के घी को ठण्डे जल में फेंट लें और फिर घी को पानी से अलग कर लें। यह प्रक्रिया लगभग 100 बार करें और इसमें थोड़ा-सा कपूर डालकर मिला दें।

  इस विधि द्वारा प्राप्त घी एक असरकारक औषधि में परिवर्तित हो जाता है जिसे त्वचा सम्बन्धी हर चर्मरोगों में चमत्कारिक की तरह से इस्तेमाल कर सकते हैं। यह सौराइशिस के लिए भी कारगर है।
- गाय का घी एक अच्छा (LDL) कोलेस्ट्रोल है। उच्च कालेस्ट्रॉल के रोगियों को गाय का घी ही खाना चाहिए। यह एक बहुत अच्छा टॉनिक भी है।
- अगर आप गाय के घी के कुछ बूंदें दिन में तीन बार, नाक में प्रयोग करेंगे तो यह त्रिदोष (वात, पित्त और कफ) को संतुलित करता है।

(नूतन निष्काम पत्रिका से साभार)

भजन तर्ज-देशी

टेक- यज्ञ-हवन-सच्चाई त्याग तेरा झूठ में होग्या सीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

सुनहरा सिंह नरवाल

1. कान पड़ाकै मोड्डा बणग्या, दिखै सही तपधारी।
आड धर्म की ले कै न चिणा-दिया गुम्बज भारी॥
आदनी साधन त्यार करा कै आपै बणा पुजारी।
आशीर्वाद उपदेश देता भ्रम में जनता आ रही।
बणकै नकली वेदाचारी खावै हलवे खीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

2. चिमटा-धूणा-तिलक-भभूती तेरा फर्जी भगमा बाणा।
कई-कई दिन तक मौन व्रत रहै पैरों से उभाणा।
साइंस के चमत्कार दिखा कै बणै तान्त्रिक स्याणा।
गोली गण्डे दे ताबीज-झाड़े चेलियों का नहीं ठिकाणा।
तणा शिकारी लिए निशाना, मारै टेम पै तीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

3. कुछ लोगों न हक मैं करकै यू पैर जमावै पूरे।
शुल्फी-चिलम-सुलगती राखै नशी काटरे जूहरे।
भोले-भोले हरदम रटता मन में ख्याल अधूरे।
शंख-टाल-खड़ताल बजावै कीर्तन हो बेसुरे।
पेट-पुजारी फिरै बेगुरे सैं पैसे के पीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

4. स्टेडियम-जिम-हस्पताल नहीं कदे विद्यापीठ बणाई।
मूर्ति-पूजा ढोंग बणाए कह मन्दिर में रघुराई।
पार्टी बाज स्वार्थी इसकी आपै करै बढ़ाई।
तेरी पोल जरूरी पाटै क्यूं ले अम्बर में अंगड़ाई।
उजगर होज्या पाप बुराई छणै दूध और नीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

5. योग से समाधि ले कै यू चाल चलै सतरंगी।
मोहमाया के जाल में फँस कै बातें करे अचंभी।
ज्ञान का दीपक बुझाये फिरे अंधकार में सिरभंगी।
सत्यार्थप्रकाश पढ़ कै तूँ क्यूं ना आयु करले लम्बी।
शुद्ध श्लोक संस्कृत हिन्दी से मन में बंध ज्या धीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

6. क्यूं सहम भ्रमता फिरै बुरे की कदे बेल हरी ना पाई।
झूठे पाखण्ड ढोंग कै सच्च की पकड़ो राही।
ब्रह्मचर्य का पालन करकै वेदों की करो पढाई।
आत्मा है परमात्मा सच्चा ज्ञान गुरु का सांई।
सुनहरासिंह नरवाल सच्चाई की कहते जीत अखीर।
नेकी-कर्त्तव्य-आचरण खोकै बणा फिरै फकीर॥

—सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर हरयाणा पुलिस निवासस्थान-नरवाल हाउस नियर 'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक।
मो० 09416357176

अथर्ववेद में स्वर्ग..... पृष्ठ 2 का शेष.....

ये घर निरोगता के आधार पर हों। हमारे लिए अन्न-रस का दोहन करने वाले हों। 'यज्ञ' त्रिलोकी को धारण करता है। यज्ञों के होने पर सब अन्तरिक्ष और द्युलोक इस पृथिवी को दीप्तिमय स्वर्गतुल्य बनाते हैं। यज्ञशील पुरुष के लिए सब काम्य पदार्थों को आप्त कराते हैं **'एष वोऽस्त्विष्टकामधुक्'**। यज्ञ हमारे जीवन को स्वर्गमय बनाए। यज्ञशील पुरुष के लिए सब दिशाएं इष्ट काम्य पदार्थों को प्राप्त करायें। सब इष्टों से परिपूर्ण होता हुआ भी यह यजमान अभिमान व क्रोध से शून्य होता है। हम माता, पिता, आचार्य आदि तीर्थों से अज्ञान को तैरकर यज्ञशील बनें। इस यज्ञशीलता से हमारे लिए सब ओर प्रकाश ही प्रकाश होता है। इस यज्ञशीलता से हम मेल वाले बनकर शक्तिशाली बनते हैं। आचार्य, पिता व माता रूप अग्नियाँ यज्ञशील पुरुष को स्वर्ग प्राप्त कराते हैं। यहाँ यज्ञशील पुरुष देवों के साथ ज्ञानचर्चाओं में आनन्द अनुभव करते हैं। प्रभु हमें सब ओर से शान्त व दीप्त जीवन वाला बनाएं। हमारे जीवनों में प्रभु ही 'आचार्य, पिता व माता' के रूप में स्थापित होते हैं। प्रभु की आज्ञा के अनुसार यज्ञ करने पर हमें प्रभु की प्राप्ति होती है। हम प्रभु के आदेश के अनुसार ही प्राजापत्य यज्ञ करने वाले हों। यज्ञाग्नि में अपने को परिपक्व करके हम विषय-वासनाओं से दूर रहें। हर सकाम यज्ञों से स्वर्ग को प्राप्त करके उन्हें निष्कामता से करते हुए प्रभु को प्राप्त करने वाले हों, यही देवयान मार्ग है।

पंचौदनः पंचधा वि क्रमता-माक्रंमस्यमानस्त्रीणि ज्योतींषि।
ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व॥
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोति दुर्गाण्येषः।
पंचौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तप्रयाति॥
अजो ३स्यज स्वर्गोऽसि त्वया लोकमङ्गिरसः प्राजानन्
तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेयम्॥
अजः पक्वः स्वर्गे लोके दधाति पंचौदनो निर्ऋतिं बाधमानः।
तेन लोकान्त्सूर्यवतो जयेम॥
(अथर्व० 9.5.8,9,16,18)

हम पाँचों ज्ञानेन्द्रियो से ज्ञानप्राप्ति के कार्य में लगे रहें। यज्ञशील व पुण्यकर्मा बनकर ब्रह्मलोक में विचरण करने वाले बनें। हम गति द्वारा बुराइयों को दूर करने वाले बनकर पुण्यकर्मा लोगों के लोक में आरूढ़ हों। प्रार्थनामय जीवन वाले बनकर शरभ के समान शत्रुओं को शीर्ण करते हुए दुर्गों को लांघ जाएं। ज्ञानप्राप्ति में लग कर अपने को प्रभु के प्रति अर्पित करें। इसी अर्पण करने वाले को प्रभु आनन्दविभोर कर देते हैं। हम इस जीवन में पांचों ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान-प्राप्ति में प्रवृत्त हों। जीव 'अज' है, 'स्वर्ग' है। उसे गतिशील बनकर बुराई को अपने से परे फैंककर प्रकाश प्राप्त करना है। उसके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए अन्य लोग भी प्रभु को जान पाएं। इस 'अज' की एक कामना है कि 'मैं उस प्रकाशमय पवित्र प्रभु को प्राप्त कर पाऊँ।' इस प्रकार अपने को ज्ञानाग्नि में परिपक्व करें। गतिशीलता द्वारा बुराइयों को परे फैकने वाले बनें। पतन के मार्ग को अपने से दूर रखें। इससे हमाराजीवन स्वर्गोपम बनेगा और हम ब्रह्मलोक को प्राप्त करने वाले बनेंगे। महादेव, सुन्दरनगर-174407, हि.प्र.

अपील

सभी आर्यसमांजों, सदस्यों, सक्षम दानी महानुभावों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के परिसर में 24 कमरों का निर्माण कार्य चल रहा है। सभा कार्यालय परिसर में ऋषिलंगर (भोजनालय) चलता है। अतिथियों के लिए भोजन की नियमित सुन्दर व्यवस्था की जा रही है। सभा के ऋषिलंगर (भोजनालय) में साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी निःशुल्क भोजन करते हैं। साथ ही प्रतिदिन प्रातः-सायं नियमित रूप से यज्ञ किया जाता है। आप अपनी वैवाहिक वर्षगांठ, जन्मदिवस, गृहप्रवेश या अन्य अवसर पर सहयोग कर सकते हैं। सहयोगदाता का नाम सभा के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'आर्य प्रतिनिधि' में प्रकाशित किया जायेगा। अतः समस्त दानी महानुभावों से अपील है कि सभा परिसर में चल रहे निर्माणकार्य एवं सभा के ऋषिलंगर भोजनालय हेतु अधिक से अधिक दानराशि एवं आटा, दाल, चावल, घी, गेहूँ अथवा अन्य प्रकार से सहयोग देकर एक आहुति अवश्य डालें और इस पवित्र यज्ञ के सफल संचालन में सहभागी बनें।

नोट—दो लाख पचास हजार रुपये देने वाले दानी महानुभावों का नाम नवनिर्मित कमरे के साथ उसके नाम का पत्थर लगाया जाएगा।

निवेदक—

आचार्य बलदेव	आचार्य विजयपाल	मा. रामपाल आर्य	कन्हैयालाल आर्य
सभा-संरक्षक	सभा-प्रधान	सभा-मन्त्री	सभा-कोषाध्यक्ष

भारत के पतन के कारण

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

महर्षि दयानन्द जी महाराज का वैदिक धर्म को लाकर मानवता और समाज की निम्न प्रकार की दुर्दशा को हटाना मुख्य उद्देश्य था—

(1) वैदिक धर्म का नाना प्रकार के मत-मतान्तर और सम्प्रदायों में विभक्त होकर परस्पर एक-दूसरे को करना। वेद के विरुद्ध अनेक सम्प्रदायवाद चलाना।

(2) एक ईश्वर उपासना के स्थान में न केवल देवी-देवताओं किन्तु भूत-प्रेत, पैगम्बर, कब्र, मजार आदि को सांसारिक कामनाओं के लिये पूजना।

स्वामी वेदरक्षानन्द जी

(3) मूर्तिपूजा का दुरुपयोग और मन्दिर तीर्थ आदि पवित्र स्थानों में नाना प्रकार के दुर्व्यवहार। अर्थों का अनर्थ करना स्वार्थ में। मूर्ति व मन्दिर परमात्मा का बनाया हुआ मानव शरीर से कीट तक के शरीर। परन्तु केवल मानव शरीर है, जिससे मन दृढ़ होता है। न कि मिट्टी, ईंट, गारे, संगमरमर का मनुष्य बनाया हुआ मन्दिर नहीं। क्योंकि इन मंदिरों में मन को पांचों विषयों में लगाया जाता है जहाँ शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध हैं, जिनको साकार कहते हैं। मूर्तिपूजा दो प्रकार परमात्मा ने जिनको बनाया कीट से लेकर मानव शरीर मूर्ति है। सज्जनों का सम्मान आदर सत्कार करना। दुष्टों का सत्कार दण्ड से है। यथायोग्य सत्कार करना ही पूजा है। तीर्थ सत्य, संयम, सदाचार, धर्माचरण वेदानुकूल आचरण ही तीर्थ है। इनको आचरण में लाना तीर्थ-स्थान है।

(4) गुण, कर्म, स्वभाव को छोड़कर जन्म से जात-पात की व्यवस्था मानने के कारण ऊँची कहलाने वाली जातियों की प्रमाद के कारण अवनति और ऊँची कहलाने वाली जातियों की उन्नति के मार्ग में रुकावट इसका परिणाम स्वरूप सारे हिन्दू-समाज की अधोगति।

(5) स्वयं अपने गुण, कर्म और स्वभाव को ऊँचा बनाने की अपेक्षा एक दूसरे को नीचा, छोटा, झूठा और अपूर्ण बतलाकर अपनेको ऊँचा बड़ा, सच्चा और पूर्ण सिद्ध करने की आसुरी चेष्टा। इस प्रकार हिन्दुओं में भ्रातृभाव, समानता, आदर और सत्कार का अभाव।

(6) ऊँचे सवर्ण कहलाने संकीर्ण-हृदय मनुष्य का नीची कहलाने वाली निर्धन जातियों का न केवल धार्मिक-सामाजिक और नागरिक अधिकारों का हरण करना किन्तु उसके प्रति पिशाचवत् अत्याचार करके उनको दूसरे मजहबों के जाल में फँसने के लिये मजबूर करना।

(7) बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदि नाना प्रकार की कुरीतियाँ। स्त्रियों को शूद्रा बताकर उनको जन्म-सिद्ध धार्मिक-सामाजिक और अधिकारों से वंचित रखना, विधवाओं के साथ अन्यायपूर्वक दुर्व्यवहार।

(8) हिन्दुओं के सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, नागरिक और वैयक्तिक आदि सारे अंगों में स्वार्थमय जीवन।

(9) सार्वभौम वैदिक धर्म को मूर्खता और अज्ञानता से संकीर्ण करके न केवल अन्य मतावलम्बियों के लिए उसमें प्रवेश का द्वार बन्द कर देना किन्तु अपनी झूठी स्वार्थसिद्धि के लिए पौराणिक भाइयों ने वैदिक धर्म में मिलने नहीं दिया। छोटी-छोटी बातों में अपने भाइयों को धर्म के ठेकेदारों ने अपने से पृथक् करके विधर्मियों के जाल में फंसने-फंसाने में सहायक होना।

(10) उपर्युक्त सारे दोषों से अनुचित लाभ उठाकर देश-विदेशीय महजबों का न केवल विद्याहीन छोटी जातिवाले गांवों, पहाड़ों, जंगलों में रहने वाले अनपढ़ हिन्दुओं को किन्तु नीलकण्ठ जैसे बड़े-बड़े अंग्रेजी पढ़े हुए विद्वानों को पौराणिक कथाओं में अयुक्ति और दोष दिखलाकर अपने स्वार्थ के लिए धोखा देना है, परन्तु कर्म का फल स्वयं भोगना पड़ेगा।

(11) राष्ट्र का परतन्त्र होना, विदेशराज के कारण देशभक्ति प्राचीन सभ्यता और धर्मभाषा के प्रति प्रेम का अभाव, दासता के विचार स्वदेशी भाषा संस्कृति और सभ्यता की ओर प्रवृत्ति इत्यादि-इत्यादि। वैदिक धर्म छोड़ने के कारण ये दोष आये हैं।

गीत

कहना जो मान लेते, उस योगिराज का।
ढांचा बदल जाना था, भारत राज्य का॥ टेक॥
शुद्धि का चक्कर चल जाता, बनता ना पाकिस्तान।
हमें क्यों मिलती रोजे, नुमाज का॥ 1॥
सत्य कहने से टलते नहीं, चाहे प्राण भी जाओ।
जग लोहा मान लेता, तेरी जबान का॥ 2॥
गर आप भाग ले लेते, राजनीति में।
भूमण्डल पर काबू होता, आर्यसमाज का॥ 3॥
'वीरेन्द्र' सुन खिंच आते हैं, लोग आप ही।
कुछ ऐसा ही ढंग है तेरे सुख-साज का॥ 4॥

ओ३म्

दुनिया के प्यार में क्या रस है, जब प्यार पिता से पा न सका।
यह जन्म तभी तक बन्धन है, जब तक दुःख में भी गा न सका।
है भक्ति तभी प्रभु चरणों में, विश्वास अटल जब जम जाए।
क्या भक्त है वह तूफानों को, आभार न उसके मान न सका।
है पूजा यही, जो भी कुछ है, जगदीश के अर्पण कर देना।
वह पूजा नहीं आडम्बर है, दिल में जो हिलोरे ला न सका।
हूँ इन्द मैं जग के सारे विषय, मिलकर भी मुझे हरा न सकते।
वह चेतन क्या जड़ जगती को, जीवन में जो ना जीत सका।
इस जन्म का संचित धर्म सदा, परजन्म की पूंजी बनता है।
उस जन्म में जीव क्या लायेगा, इस जन्म में जो वो कमा न सका।
हे 'सत्य' मुझे तू बना ले सखा, दुनिया न कभी दुत्कार सके।
जग अपना बनाकर क्या होगा, गर तुझको ही अपना बना न सका।

जन्म और मृत्यु तो शरीरों के आवश्यक धर्म हैं। जो वस्तु संसार में नहीं है उसकी उत्पत्ति और जो है उसका नाश कभी नहीं होता। हाँ, प्रकृति की वस्तुएँ बहुरूपीय अनेक रूप अवश्य बदलती रहती हैं। रह गया शरीर धारण करने वाला आत्मा, सो वह अमर है। एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना भी उसका पुराने वस्त्र को छोड़कर नया पहन लेने के समान है।

(साभार-वैदिक गीता, पृष्ठ 116)

भेंटकर्त्ता :- सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

सरल आध्यात्मिक शिविर

दिनांक : 13 नवम्बर से 17 नवम्बर 2015 तक
स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक
शिविर आयोजक : वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास (पंजी.) रोहतक

शिविराध्यक्ष : स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

अन्य विद्वान् : स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक, आचार्य कर्मवीर जी योग शिक्षक, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) व कमलेश राणा जी, महिला योग शिक्षिका, रोहतक।

प्रवेश शुल्क: 1000/- रुपये

आवेदन करने की अन्तिम तिथि 5 नवम्बर 2015

शिविर प्रवेश पात्रता

1. स्वस्थ व्यसनरहित अनुशासन में चलने वाले को प्रवेश दिया जाएगा।
2. आयुसीमा—न्यूनतम 15 वर्ष।
3. शिक्षा—न्यूनतम 10वीं कक्षा पास।

विशेष-उच्च शिक्षा प्राप्त युवक/युवतियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी। ब्रह्मचारियों के लिए प्रवेश नि:शुल्क होगा। अन्य छात्र एवं छात्राओं के लिए शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में प्रवेश के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।

आवेदन/पंजीकरण करने हेतु सम्पर्क सूत्र—

श्री हवासिंह राठी - मोबा० 09466008120
श्री कर्णसिंह मोर - मोबा० 09728884949
श्री सुगमा मुनी (पूर्व नाम श्रीमती अंगूरी देवी आर्या) - मोबा० 09812792770
निवेदक : निगम मुनि, मोबा० 9355674547

सब मनुष्यों के लिए धर्म एक समान है

मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए ही यह उन्नति और श्रेष्ठता को प्राप्त करता है। मनुष्य की उन्नति तथा श्रेष्ठता के स्तर को समाज समूह ही सिद्ध करता है। समाज क्या है? जिस समूह में मानवीय सिद्धान्तों का पालन होता हो, उसको मानव समाज कहा जाता है। परन्तु मनुष्य जन्म से शूद्र है, अज्ञानी है, तो प्रश्न उठता है कि फिर यह सिद्धान्त अर्थात् जीवन को उत्तम प्रकार से जीने की कला-ये ज्ञान कहाँ से आया? इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं। जैसे एक नन्हें बच्चे को उसकी अवस्था अनुसार उसके माता-पिता उसे चारों तरफ का ज्ञान कराते हैं, ठीक उसी प्रकार वह परमेश्वर जो सबका उत्पन्नकर्त्ता होने से सबका पिता और माता है। वह परमपिता ईश्वर ही यह सब ज्ञान देता है। अर्थात् जब संसार में मनुष्य पैदा हुआ साथ में परमपिता ने अपनी सन्तान के लिए एक समान ज्ञान भी दिया ताकि उस ज्ञान से उचित व्यवहार करे और सब वस्तुओं का ठीक-ठीक प्रयोग करते हुए अपना और दूसरों का उपकार कर सके। इसलिए सबके लिए एक समान न्यायव्यवस्था बनाई कि मनुष्य जैसा कर्म (अच्छा या बुरा) करेगा उसका फल भी उसी अनुसार अवश्य मिलेगा, इसलिए ईश्वर न्यायकारी है, सर्वज्ञ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने संसार को कुछ सिद्धान्त दिये जिनमें पहला सिद्धान्त भी यही सिद्ध करता है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। इस प्रकार यह सिद्ध है कि सब ज्ञान ईश्वर से प्राप्त होता है।

जैसे सारे संसार और सब प्राणियों का स्वामी एक परमेश्वर है उसी प्रकार सबका धर्म भी एक ही है और इस मानव धर्म का ज्ञानकेन्द्र है वेद, जो ईश्वरीय ज्ञान है। ईश्वर ने अपने अनन्त सामर्थ्य से जैसे संसार की रचना की इसमें पृथ्वी, सूरज, चांद आदि बनाकर स्थिर किए उसी सामर्थ्य से वेदज्ञान को पवित्र आत्माओं में उतार दिया। इस वेदज्ञान को ऋषियों ने मनुष्यों तक पहुंचाने का कार्य किया और करोड़ों वर्षों तक वेदज्ञान, वैदिक धर्म के रूप में माना जाता रहा। संसार के सब मनुष्यों की मान्यता का एकमात्र केन्द्र रहा और महाभारत काल तक एक धर्म के रूप में माना जाता रहा। एक धर्म से एक मान्यता बनी रही तथा एक मान्यता का केन्द्र होने से सबके विचार भी एक दूसरे के अनुकूल बने रहे। यही कारण था कि उस समय तक संसार में कहीं भी धर्म-मान्यता के आधार पर कोई युद्ध नहीं हुआ।

परन्तु महाभारत युद्ध में जो विद्वानोंऔर महान् पुरुषों का नाश हुआ उससे सारी मानवता पतन की तरफ बढ़ने लगी। वैदिक विद्वान् कम हो गये जो बचे थे उन्होंने समाज को त्याग दिया और वनमार्ग अपना लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि कुटिल, स्वार्थी, लालची, धूर्त लोग ज्ञान के अभाव से ऋषियों, विद्वानों के स्थान पर कार्य करने लगे। एक ऋषि, मनीषी सत्य ज्ञान का संवाहक होता है, वह दूसरों को भी सत्यज्ञान देता है और सत्यज्ञान के ही प्रचार-प्रसार में अपने जीवन को लगा देता है। वह चाहता है कि सब ज्ञानवान् बनें। परन्तु एक स्वार्थी, धूर्त, कामी, भोगी व्यक्ति अपने चारों तरफ के मनुष्यों को अज्ञानी, मूर्ख, अन्धविश्वासी बनाना चाहता है इसके लिए वह पूरा प्रयास करता रहता है ताकि उसका स्वार्थ और उसकी ऐषणायें पूरी होती रहें। इस प्रकार समाज में वैदिक विद्वानों तथा ईश्वरभक्त, परोपकारी तपस्वी आचार्यों के स्थान पर ये लम्पट लोग धर्माधिकारी भी बन गये। धर्म के नाम पर भोली जनता का शोषण करना आरम्भ कर दिया। साथ में उनके चेले-चेली और अनुयायियों ने अपनी मौज-मस्ती के लिए तथा अपना सर्वस्व बनाए रखने के लिए बड़े-बड़े प्रपंच, ढोंग रचने लगे। एक निराकार ईश्वर के स्थान पर अनेक भगवानों की कथा और उनके रूप बना लिये तथा इस प्रकार अनेक काल्पनिक शक्तियों का चलन समाज में आरम्भ कर दिया और आगे चलकर इन काल्पनिक भ्रमित करने वाली कथाओं ने पुराणों का रूप ले लिया जो वेदविरुद्ध, प्रकृति के प्रतिकूल विज्ञान के विरुद्ध चमत्कारों पर आधारित तथा पतन की ओर ले जाने वाला अज्ञान है।

जैसे वैदिक काल में मनुष्यों की बुद्धि वेदज्ञान से प्रकाशित रहती थी और मनुष्य शुभ कर्म करते हुए जीवन को सफल कर जाते थे। पुराणों की रचना और प्रचार के बाद लोगों की बुद्धि अज्ञानता के अन्धकार में फंसकर भ्रमित हो गई, अच्छे-बुरे का बोध नहीं रहा। लोग सत्य मार्ग को छोड़कर असत्य, आत्मा के विपरीत कुमार्ग पर चलने लगे अर्थात् जिस देश से मानव धर्म का ज्ञान का प्रसार होता था, वह अब पतन के रास्ते पर चल पड़ा। बुद्धिजीवी सत्य-असत्य का ज्ञान भूल गये। इसका असर सारे संसार पर पड़ा। अनेक भ्रमित करने वाले विचार फैले कि किसी भी वस्तु में भगवान् की भावना कर पूजा करो तो वह वस्तु भगवान् बनकर कार्य करेगी। अनेक प्रकार के भगवान् पूजे जाने लगे और एक निराकार परमेश्वर की उपासना छोड़कर पत्थर, मिट्टी आदि के भगवानों की पूजा ने जोर पकड़ लिया। अज्ञानता बढ़ती गई, ज्यों-ज्यों दु:ख बढ़ते गये। शान्ति खत्म होती गई अशान्ति और असन्तोष बढ़ ने लगा। धार्मिक कर्मकाण्ड कराने वाले और इन अनेक भगवानों के मालिक अपने निजी स्वार्थ में धर्म और भगवान् के नाम पर अपने ही लोगों को लुटते चले आ रहे हैं और चारों तरफ पाखण्ड जाल फैलाते जा रहे हैं।

इन हजारों वर्षों में कई विद्वान्, समाज सुधारक, समाज में प्रचलित धर्म के नाम पर पाप, अनाचार का विरोध करने वाले संत संसार में आए और उन्होंने बहुत कुछ किया भी परन्तु पाखण्डी धर्माधिकारियों के फैले इस जाल को काट नहीं पाए। कुछ एक सन्तों ने इस धार्मिक शोषण और अन्धविश्वास के विरुद्ध अपने विचार दिए। इनसे पशु की बलि-प्रथा, स्त्री और शूद्र के शोषण के विरुद्ध आवाज उठी और यह काम भी हुआ परन्तु यह असर अलग-अलग स्थानों पर हुआ और कुछ समय बाद इन संत, गुरुओं के अनुयायियों ने अपने-अपने संत के नाम को लेकर अपने मत, पंथ, मजहबों को खड़ा कर लिया। इससे सारा समाज बंटता गया, सबकी अलग-अलग मान्यताएं होने से ये समाज समूह एक-दूसरे के विरोधी बनते गए। जिससे मानव और मानव धर्म को भारी हानि पहुंची। इस प्रकार ईश्वर प्रदत्त वैदिक धर्म के विपरीत इन गुरु, मत, पंथ वालों ने अलग-अलग समूह बनाकर भोली जनता को अपने-अपने जाल में घेरने का काम आरम्भ कर दिया। सबको साथ करने के स्थान पर अलग कर दिया। कहने को तो कह देते हैं कि सब एक ही हैं, परन्तु वास्तव में अनेक हो चुके हैं।

आज अधिकतर लोग वेद ज्ञान के जाने बिना इस पाखण्ड में उलझे हुए हैं। सबको अलग-अलग भगवान् होने से आस्था और मान्यता के केन्द्र भी अलग हो गये। इसका परिणाम यह हो रहा है कि आज परिवार बंट गए, समाज बिखर गया, सब एक-दूसरे के विरोध में खड़े हैं और इससे राष्ट्र की जो हानि हो रही है उसके बारे में विचार करने का विवेक नहीं रहा। बुद्धिजीवी और सरकारें आंख, कान बन्द किये हुये हैं। यही कारण है आज चारों तरफ अनैतिक कार्य करने वाले, ढोंगी, धर्माधिकारी फल-फूल रहे हैं। परमेश्वर का ज्ञान देने के स्थान पर अपने पंथ और गुरुडम को फैलाने में लगे हैं और अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति कर रहे हैं चाहे धर्म की हानि हो या राष्ट्र का पतन हो।

बड़े पुण्य कर्मों के बाद मिला यह अनमोल मानव शरीर माता-पिता, विद्वानों और राष्ट्र एवं मानवता की सेवा में लगाने की बजाय ढोंगी, लम्पट, गुरु बने पाखण्डी लुटेरों को सौंप रहे हैं। आत्मा और परमात्मा को जानने के स्थान पर व्यक्ति पूजा और जड़ पूजा में उलझकर इस जीवन और अगले जन्म को भी खराब कर रहे हैं। इस मनुष्य जीवन में शुभकर्म करते हुए परमेश्वर के आनन्द को पाना था मगर अज्ञानता के प्रभाव से स्वार्थ में फँसे लोग मुख्य उद्देश्य से भटक कर संसार के नाशवान् व्यापार में लगे हुए हैं। इस प्रकार न जाने कितने जन्म और लेने होंगे साथ में अनेक दु:खों और कष्टों से गुजरना होगा।

ऋषि और मनीषी कहते हैं कि हे मानव तू जाग और परमेश्वर के सत्य स्वरूप को जानने का प्रयत्न कर इसी में तेरा कल्याण छुपा है। क्यों इधर-उधर अज्ञानता में भटक कर जीवन को नष्टकर रहा है। क्योंकि वह परमेश्वर ही सबका जन्मदाता, पालक, रक्षक पिता है, वह हमारे सब जन्मों और सब कर्मों को जानता है। उससे छुपकर प्राणी कोई भी कार्य नहीं कर सकता। सब प्राणी उसके सामने ऐसे हैं जैसे माँ के सामने उसका नन्हा

क्रमश: पृष्ठ 8 पर...

सब मनुष्यों के लिए धर्म एक.... पृष्ठ 7 का शेष....

बालक। म। ल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य वाली होने पर भी अपनी क्षमतानुसार वे सारे प्रयत्न करती है कि उसकी सन्तान हर प्रकार से सुखी हो, स्वस्थ हो और उन्नति करे। परमेश्वर तो सर्वाधार, सर्वव्यापक और सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् है वह अपने अनन्त सामर्थ्य से प्राणियों की रक्षा हेतु संसार में अनेक प्रकार के पदार्थों का निर्माण उनके पैदा करने से पहले ही कर देता है ताकि उसकी सन्तान अपने कल्याण के लिए इन पदार्थों का उपयोग कर सके। उस परमपिता ने इतना ही नहीं उपकार किया बल्कि एक और महान् उपकार किया कि सृष्टि के प्रारम्भ में ही सब सत्य विद्याओं को उत्तम पुण्य आत्माओं की बुद्धि में दे दिया ताकि सब इस ज्ञान को जानकर शुभकार्य करते हुए जीवन को सफल बना लें। चार महान् पुण्य आत्माओं की बुद्धि में दे दिया ताकि सब इस ज्ञान को जानकर शुभकार्य करते हुए जीवन को सफल बना लें। चार महान् ऋषियों द्वारा यह ज्ञान मनुष्यों को प्राप्त हुआ। अग्नि ऋषि द्वारा 'ऋग्वेद', जिसका विषय ज्ञान है। वायु ऋषि द्वारा 'यजुर्वेद' दिया गया, जिसका विषय कर्म है। ऋषि आदित्य द्वारा 'सामवेद' की रचना हुई, जिसका विषय उपासना है और ऋषि अंगिरा द्वारा चौथा वेद 'अथर्ववेद' की रचना हुई जिसका विषय विज्ञान है।

इस प्रकार इन चार वेदों में तिनके से लेकर विशाल ब्रह्माण्ड (जिसमें सब लोक-लोकान्तर आते हैं) का ज्ञान तथा आत्मा से परमेश्वर तक का सारा रहस्य सीधा या संकेत के रूप में प्राप्त है। इसीलिए सब संसार में जो भी ज्ञान-विद्या है उसका आधार वेद ही है। वर्तमान युग में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने अपने ज्ञान-बल से सिद्ध किया कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उसका आदिमूल परमेश्वर है। दूसरा यह कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इतना ही नहीं आगे संदेश भी दिया कि वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। अत: सत्य ज्ञान को जानने के लिए वेदों का पढ़ना-पढ़ाना आवश्यक है अन्यथा अज्ञान में फंसकर रह जायेंगे। मनुष्य की बुद्धि ज्ञान से ही सक्रिय होती है। संसार में जितने भी मत, पंथ और सम्प्रदाय हैं उनमें जो-जो अच्छी शिक्षा है वह सब वेदों से ही आई हैं, जैसे जल अपने स्रोत से निकलता है। अत: यह सिद्ध है कि मनुष्य जीवन का जो मुख्य लक्ष्य है कि अपना तथा दूसरों का उपकार करते हुए, दु:खों से छूटकर परम आनन्द मोक्ष को प्राप्त करना है। यही जीवात्मा और मनुष्य का धर्म है। अत: मनुष्य होने का आधार धर्म ही है अर्थात् मनुष्य तब तक मनुष्य है जब तक वह धर्म को धारण किये है। इस प्रकार सब पदार्थों का धर्म के साथ अटूट सम्बन्ध है। धर्म से ही प्रत्येक पदार्थ की पहचान होती है, धर्म से ही उनका महत्त्व होता है।

मनुष्य जाति बाकी सब जातियों से श्रेष्ठ है। इसमें विवेक से कर्म करने की योग्यता है और मनुष्य ही ईश्वर उपासना द्वारा आनन्द को प्राप्त कर पाता है। दूसरे प्राणी भोग योनि में होने से कर्म करने में सक्षम नहीं हैं। मनुष्य का कर्म ही उसका धर्म और अधर्म है। धर्म के बिना कुछ नहीं जैसे अग्नि अपनी उष्णता से अग्नि है। उष्णता अग्नि का धर्म है अन्यथा अग्नि नहीं है। धर्म सदा रहता है, एक-सा रहता है इसमें बदलाव नहीं होता जैसे परमेश्वर में कोई बदलाव नहीं होता। इसलिए मनुष्य के लिए धर्म बहुत महत्त्वपूर्ण और धर्म ही अन्त का साथी है। विद्वान् ने कहा है—

धर्म ही है एक अन्त का साथी, मन को यह समझाया कर।
हो विरक्त इस संसार से, उस ईश्वर को तू ध्याया कर॥

इसलिए सब मनुष्यों के लिए अति आवश्यक है 'धर्म' की सत्य जानकारी प्राप्त करें। सत्य ज्ञान मनुष्य को ईश्वरभक्ति वेदज्ञान से ही मिल सकता है। महान् योगी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यह सिद्ध करके बताया कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। सब ऋषियों ने, विद्वानों ने भी वेदज्ञान को भी सत्य माना है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भी वेद को ज्ञान की सबसे प्राचीन पुस्तक माना है। इस प्रकार वेद ही सत्य ज्ञान का केन्द्र है। ऋषियों ने बताया है कि ईश्वर, आकाश, सत्य और धर्म अनेक नहीं होते। इसलिए धर्म वही है जो वेदों में बताया गया है।

संसार में अनेक बुद्धिजीवी व्यक्ति जो अपने को प्रगतिशील बताते हैं वे कहते हैं कि सबकी मान्यता, आस्था और उनके धर्मों का सम्मान करना चाहिए। वे अज्ञानतावश यह प्रचार करके समाज में बड़ी भ्रान्ति फैला रहे हैं क्योंकि अलग-अलग मान्यताओं के आधार पर अलग-अलग धर्म नहीं होते यह सिद्ध है। इसलिए विभिन्न धर्म होने की मान्यता मिथ्या और निराधार है।

आखिर यह धर्म क्या है? आओ जानते हैं वेदज्ञान और वैदिक विद्वान् धर्म के बारे में क्या कहते हैं? ध्यान से जानो, धर्म श्रेष्ठ आचरण, उत्तम व्यवहार है। जीवन को जीने का सर्वोत्तम अन्दाज है अर्थात् सर्वोत्तम विचारों को अपनाकर जीवन जीने को धर्म कहा है। '**आचार: परमो धर्म:**' अर्थात् जो-जो शुभकर्म हैं उनको करना और अशुभ कर्मों से दूर रहना। अपने निष्ठा कर्त्तव्यों का पूर्णता से निर्वाह करना धर्म है। ऋषि-मुनि और तपस्वियों ने वेदों से जो ज्ञान प्राप्त किया वह धर्मरूप है। महर्षि कणाद ने बताया कि वह कर्म जो लोक और परलोक की सिद्धि में सहायक है उसे धर्म कहते हैं। वेदव्यास ने कहा जो धारण करने योग्य है, जिसके द्वारा सच्चा संरक्षण मिले वह धर्म है। महाराज मनु बताते हैं कि जो वेद, स्मृतियों से समर्पित महापुरुषों द्वारा आचरित हो और आत्मा को प्रिय लगे वह धर्म है। धर्म के दस लक्षण दिये हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) **धृति**-अर्थात् हर अवस्था में धैर्य रखना। (2) **क्षमा**-हर दु:ख, अपमान और हानि में भी सहनशील रहना। (3) **दम**-मन को सदा धर्म में ही लीन रखना। (4) **अस्तेय**-चोरी, छल-कपट, विश्वासघात तथा वेदविरुद्ध कार्यों का सर्वदा त्याग करना। (5) **शौच**-मन की तथा शरीर की पवित्रता रखना। (6) **इन्द्रिय-निग्रह**-इन्द्रियों को सदा धर्म में ही लगाना। (7) **धी**-श्रेष्ठों का ग्रहण, सत्पुरुषों का संग और योगाभ्यास में बुद्धि बढ़ाना। (8) **विद्या**-पृथ्वी से परमेश्वर तक का अर्थात् ज्ञान और वैसा ही व्यवहार करना। (9) **सत्य**-जो जैसा हो वैसा ही जानना-मानना तथा वैसा ही व्यवहार करना। (10) **अक्रोध**-दोषों को छोड़ के शान्ति, सन्तोष आदि गुणों को ग्रहण करना। अत: इन सब से यह सिद्ध है कि धर्म का सम्बन्ध आचरण से है, चरित्र से है, किसी पहनावे, किसी पूजा-पाठ, जड़पूजा तथा अन्य कर्मकाण्डों से नहीं। मन, वाणी और शरीर से जो व्यवहार हम करते हैं वह धर्म और अधर्म है।

इस प्रकार धर्म को शुद्ध रूप में जानकर शुभ आचरण करते हुए हम यह मनुष्य जन्म को सफल कर सकते हैं। इस प्रकार अलग-अलग मत वाले धर्म को अलग नहीं बता सकते।

—सुभाष सांगवान, मंत्री, आर्यसमाज
तिलक नगर, रोहतक 9466258105

साप्ताहिक सत्संग विधिवत् सम्पन्न

आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का साप्ताहिक सत्संग महात्मा आनन्द स्वामी सभागार भवन में दिनांक 1.11.15 को विधिवत् रूप से सम्पन्न हुआ। प्रात: यज्ञ के ब्रह्मा कैलाश शास्त्री थे, मन्त्रपाठ विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। बनीसिंह जांगड़ा ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। शास्त्री जी ने यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला।

विद्यालय के छात्र विक्रमादित्य द्वारा ईश्वरभक्ति भजन गाया गया और ब्रह्मचारी रुचिमय आर्य द्वारा माता की महिमा पर प्रकाश डाला। आर.एस. चुघ व चिरंजीलाल आर्य के भजन हुए। महात्मा अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि स्वामी दयानन्द के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए दो विधि और एक निधि पर सरल शब्दों में व्याख्या की। वैदिक विद्वान् डॉ. प्रमोद योगार्थी ने 'ओ३म्' के प्रमुख नाम की विशेष चर्चा करते हुए आर्यसमाज के दूसरे नियम पर प्रकाश डाला और जीवन में ऊँचा उठने के लिए ओ३म् का जाप करना चाहिये यह अवगत करवाया। विनय मल्होत्रा ने मंच का संचालन किया।

इस अवसर पर चौ. निहालसिंह पूर्व इंस्पेक्टर, दलीपसिंह आर्य, प्रेमसिंह गाभा, अवनीश आर्य, जगन्नाथ चुघ, सुरेन्द्र रावल, सतीश रावल, श्रीमती सन्ध्या आर्या आदि विशेष महानुभाव उपस्थित थे।

—प्रमोद लाम्बा, मंत्री आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय (हिसार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में **प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।**
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की **अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।**